NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

धान की नर्सरी रोग प्रबंधन

सिंटू प्रजापति, अजित कुमार, अभिषेक कुमार

परिचय:

धान की नर्सरी अवस्था में पौधों में अक्सर झुलसा रोग, भूरा धब्बा और टुंग्रो वायरस का प्रकोप देखा गया है। इसकी रोकथाम के लिए रोग के लक्षण दिखाई देते ही निम्न उपायों को काम में लाएं-

- **नर्सरी में अधिक नाइट्रोजन उर्वरक का प्रयोग करने से बचें।**
- धान की सहिष्णु किस्मों का उपयोग करें। सयाजी संकर धान 2011, 2012 और 2018 प्रमुख कीटों और रोगों के प्रति सहनशीलता रखता है जिससे आपको अच्छी उपज मिलती है।
- बीज का सूखा उपचार करने के लिए स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस पाउडर की 10 ग्राम मात्रा को प्रति किग्रा बीज के हिसाब से उपचार करें। बीजोपचार करने से बीजों से पैदा होने वाले रोगों से बचा जा सकता है।
- नर्सरी में 2.5 सेमी की गहराई तक पानी रखें। 2.5 किग्रा स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस / ट्राइकोडर्मा विरडी पाउडर का छिड़काव करें और उसे नर्सरी के पानी के साथ मिला दें। 30 मिनट तक पौधों की जड़ों को इसमें भिगो कर रखें और इसके बार प्रत्यारोपित करें।
- बीज उपचार के लिए कार्बेन्डाजिम, या ट्राईसाइक्लोजोल को 2.0 ग्राम / किग्रा बीज की दर से अच्छी तरह से बीजों में लगा दें।
- कार्बेन्डाजिम या ट्राईसाइक्लोजोल का 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

कीट प्रबंधन

धान की नर्सरी में थ्रिप्स, केस वर्म, आर्मी वर्म, और हरे फुदके वगैरह कीड़े पौधे को काफी हानि पहुचांते हैं। तो, इसके नियंत्रण के लिए कीट प्रबंधन जरूरी रहता है।

- कीटों से बचाव के लिए, नर्सरी में से पानी को निकाल दें और वहां क्लोरपायरीफॉस 20 ईसी 80 मिली /

सिंटू प्रजापति (शोध छात्र, तिलकधारी महाविद्यालय, जौनपुर)
अजित कुमार (शोध छात्र, श्री दुर्गा जी पी जी कॉलेज चंदेश्वर आजमगढ़)
अभिषेक कुमार (छात्र,बी.एससी.कृषि मदन मोहन मालवीय पी जी कॉलेज कालाकांकर प्रतापगढ़)

क्विनालफॉस 25 ईसी 80 मिली का छिड़काव करें।

- बेसल मात्रा के रूप में 12.5 किलोग्राम नीम केक को प्रति 10 मीटर वर्ग की नर्सरी में डालें।
- पानी में 250 मिलीलीटर केरोसिन मिलाएँ।

पोषक तत्व प्रबंधन

धान की फसल के अच्छे विकास और उससे एक बढ़िया उत्पादन लेने के लिए नर्सरी में पोषक तत्व प्रबंधन अच्छी तरह से किया जाना चाहिए।

- इसके लिए, भरपूर पानी में 600 ग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से तीन पैकेट एज़ोस्पिरिलम और तीन पैकेट फास्फोबैक्टीरिया या एज़ोस्पिरिलम की दोगुनी मात्रा के साथ यानी 1200 ग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से बीजोपचार करें।
- यदि पौध को 25 दिनों के बाद बाहर निकालना है, तो बाहर निकालने के 10 दिन पहले डीएपी का प्रयोग करें।
- 1 किलो डीएपी और 4 किलोग्राम जिप्सम को बुवाई के 10 वें दिन 10 मीटर वर्ग क्षेत्र के लिए काम में लाया जा सकता है।

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE